आधुनिक हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की उपस्थिति

डॉ. प्रदीप कुमार*

वी. पी. ओ. नारनौंद, जिला हिसार, हरियाणा, भारत

Email ID: *lohanpardeep2@gmail.com*

Accepted: 07.05.2023 **Published**: 01.06.2023

मुख्य शब्दः आधुनिक हिंदी कविता।

शोध आलेख सार

साहित्य समाज के नियमों, विचारों, संस्कृति और मान्यताओं को प्रतिबिंबित करके वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

पूरे इतिहास में, जब भी लोगों ने समकालीन साहित्य की दिशा पर सवाल उठाया है, लेखकों ने एक क्रांति जगाई है और इस विषय में लोगों की रुचि फिर से जगाई है। ये लेखक अगली पीढ़ी के साथ तालमेल बिठाने के लिए अपनी सोच को अनुकूलित करते हैं, जिससे एक बदलाव आता है जिसे जागरण, नवजागरण, नवीन आदि के नाम से जाना जाता है। इन समय के दौरान पेश किए गए नए विचारों को आधुनिक माना जाता है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

© *IJRTS Takshila Foundation,* डॉ. प्रदीप कुमार, *All Rights Reserved.*

परिचय

15वीं–16वीं शताब्दी के दौरान, अंग्रेजी साहित्य ने नवीनता की पहली लहर का अनुभव किया। अंग्रेजी लेखकों ने प्राचीन सिद्धांतों को अपनाया, भाषा की समृद्धि बढ़ाने के लिए विदेशी शब्दों को शामिल किया और भाषा के विकास पर ध्यान केंद्रित किया। आलोचकों ने भी प्लेटो को आदर्श मानकर अपना ध्यान शास्त्रीयता से हटकर व्यावहारिक समीक्षा की ओर केंद्रित कर दिया। इसके अतिरिक्त, साहित्य का उपयोग प्रचार के लिए एक उपकरण के रूप में किया गया।

इन लेखकों का मानना था कि कविता को मानव जीवन में संतुलन को बढ़ावा देने और नैतिक विकास को प्रोत्साहित करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। उनका मानना था कि सोच और लेखन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और लेखकों को इतिहास, नैतिकता, दर्शन और बहुत कुछ के ज्ञान की आवश्यकता है। वे प्राचीन मान्यताओं को तब तक स्वीकार करने के लिए तैयार थे जब तक वे उचित थीं। कवियों को न्याय, ज्ञान और भलाई के संरक्षक के रूप में देखा जाता था और उनके कार्यों की निष्पक्ष, गंभीर और जिम्मेदार होने के लिए प्रशंसा की जाती थी। सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने वाली कविताओं को पारंपरिक नियमों से मुक्त माना जाता था।

साहित्य हमारे दिमाग में एक तस्वीर की तरह है कि लोग कैसे हैं और दुनिया कैसी है। यह दर्शाने के लिए यथासंभव सत्य और सटीक होना चाहिए कि उस समय जीवन कैसा था। जब हम साहित्य पढ़ते हैं, तो यह हमें सीखने में मदद करता है और हमें खुश करता है। दो महत्वपूर्ण लोगों, जॉन डेनिस और डॉ. सैमुअल जॉनसन ने सोचा कि साहित्य के बारे में कैसे बात की जाए। उनका मानना था कि जब हम साहित्य की समीक्षा करते हैं तो हमें सिर्फ यह नहीं कहना चाहिए कि यह अच्छा है या बुरा। इसके बजाय हमें इसमें मौजूद सभी महत्वपूर्ण चीजों के बारे में बात करनी चाहिए।श लेखक अपनी कहानियों में बुरी चीजें दिखा सकते हैं, लेकिन मुख्य लक्ष्य हमें उन बुरी चीजों को पसंद न करने में मदद करना है। साहित्य हमें वास्तविक दुनिया की चीजें दिखाता है और लेखक वह व्यक्ति है जो लोगों को बहुत अच्छी तरह से समझता है। उन्हें मानव स्वभाव की गहरी समझ है और उनका लेखन हमें खुशी का एहसास करा सकता है। वे चीजों को अप्रत्यक्ष रूप से समझने में भी अच्छे होते हैं और एक वास्तविक व्यक्ति की तरह भावनाओं को सोच और महसूस कर सकते हैं। और यह पढ़ने को आनंददायक बनाता है क्योंकि यह हमें नई और दिलचस्प चीजें दिखाता है।

लगभग 100 वर्ष पूर्व हिन्दी साहित्य में नवजागरण नामक एक नये प्रकार के लेखन की शुरुआत हुई। यह आधुनिक हिंदी की शुरुआत थी। लोग अलग तरह से सोचने लगे और नई चीजें घटित होने लगीं। समाज भी बदलने लगा. पत्र और पत्रिकाएँ बनाई गईं, जिससे लोगों को अपने विचारों और भावनाओं के बारे में हिंदी के सरल रूप में लेख लिखने की अनुमति मिली। द्विवेदी काल का साहित्य समाज और उसकी उपयोगिता पर केन्द्रित था।

कहानियों और कविताओं के लेखकों का काम धैर्य, साहस, प्रेम और दयालुता जैसे गुणों का सरल तरीके से वर्णन करना था। उन्होंने इस बारे में भी बात की कि लोग कैसे सोचते और महसूस करते हैं। पहले लोग सुंदर चीजों पर ध्यान केंद्रित करते थे, लेकिन अब वे लोगों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कुछ लोगों का मानना था कि साहित्य के इस नए दौर के लिए भारत के इतिहास को देखना महत्वपूर्ण है, जबकि अन्य लोग अतीत को भूलकर नई चीजों को आजमाना चाहते थे। उन्होंने समाज, संस्कृति और लोगों को कैसे व्यवहार करना चाहिए, इसके बारे में बात की। वे महिलाओं के जीवन के बारे में भी यथार्थवादी ढंग से बात करने लगे। कविताएँ एक शक्तिशाली उपकरण बन गईं, और कवियों के लिए ईमानदार होना और चीजों को

वैसे ही दिखाना महत्वपूर्ण था जैसे वे वास्तव में हैं। आज के कवि उन चीजों के बारे में लिखते हैं जो महत्वपूर्ण हैं, भले ही अन्य लोग उन पर ध्यान न दें।

नागार्जुन एक दयालु और देखभाल करने वाले व्यक्ति थे जो उन लोगों के लिए खेद महसूस करते थे जिनके साथ गलत व्यवहार किया जा रहा था। वह सभी के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने में विश्वास करते थे और बुरी मान्यताओं से सहमत नहीं थे। नागार्जुन ने समाज को देखा और इसे कैसे निष्पक्ष तरीके से चलाया जाता है और लोगों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनके बारे में लिखा। उन्हें रीति–रिवाज या अराजकता पसंद नहीं थी और वह चाहते थे कि चीजें सभी के लिए निष्पक्ष हों। उन्होंने सोचा कि संघर्षरत और दुखी लोगों की बात सुनना और उनकी मदद करना महत्वपूर्ण है। नागार्जुन एक कवि थे जो मार्क्सवाद नामक विचारधारा से प्रेरित थे, जो निष्पक्षता और समानता के बारे में है। अपनी एक कविता में, वह भगवान से बच्चों की देखभाल करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कहते हैं कि उन्हें अपने भविष्य के बारे में चिंता न करनी पड़े।

निराश न करना इन नंग–धडंग–चतुर्भुजों को बडे होगे तो छोटे चतुर्भुज भी चलाएँगे चप्पू

नागार्जुन दुखी हैं क्योंकि नाव चलाने वाले परिवार से आने वाले युवा लड़के अपने माता–पिता और दादा–दादी के समान ही काम कर रहे हैं। वह गंगा मैया पर क्रोधित होते हैं क्योंकि उन्होंने इन लड़कों को अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए नए विचारों और तरीकों के बारे में नहीं सिखाया।

'पुट होगा प्रवाह तुम्हारा इनसे भी श्रम–स्वेद जल से'

इसे जगाओ नामक कविता में भवानीप्रसाद मिश्र नामक कवि एक समस्या की बात कर रहे हैं। वह उन युवाओं के बारे में चिंतित हैं जो इस बात पर ध्यान नहीं देते कि उनके आसपास की दुनिया में क्या हो रहा है। वह चाहते हैं कि वे जागें और अपनी और अपने देश की परवाह करना शुरू करें। वह सूरज, हवा और पक्षियों से भी उन्हें जगाने में मदद करने के लिए कहता है।

यह आदमी एक सोते हुए व्यक्ति की तरह है जो नहीं जानता कि वास्तविकता क्या है। वह अपने सपनों में खोया हुआ है.

यदि आप समय पर नहीं जागते हैं और सक्रिय नहीं हैं, तो कुछ बुरी चीजें हो सकती हैं। यही कारण है कि बच्चों के लिए सावधान रहना और ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

जो आगे निकल गए हैं उन्हें पाने
घबरा के भागेगा यह क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है।'

बहुत समय पहले, कुछ कवियों ने विशेष कविताएँ लिखीं जो लोगों की आदत से भिन्न थीं। तब से, हिंदी साहित्य का अध्ययन करने वाले कई लोग इन कविताओं का अर्थ समझने और दूसरों, विशेषकर छात्रों को समझाने की कोशिश कर रहे हैं। इन कविताओं का छात्रों पर बड़ा प्रभाव पड़ा है और अब उनका अपने

भविष्य पर अधिक नियंत्रण हो गया है। ऐसा हुआ करता था कि लोग अपनी समस्याओं के लिए अपने पिछले कार्यों को दोषी मानते थे और चीजों को बदलने के लिए बहुत अधिक प्रयास नहीं करते थे। वे भाग्य पर भरोसा करते थे और दूसरों को अपने लिए निर्णय लेने देते थे। लेकिन अब, चीजें अलग हैं और छात्र अधिक स्वतंत्र हैं और अपनी पसंद खुद बना सकते हैं।

आज की नई पीढ़ी के युवा अपनी समस्याओं के लिए अपने पिछले कार्यों को दोष नहीं देते हैं। वे भाग्य पर भरोसा नहीं करते हैं, बल्कि कड़ी मेहनत करते हैं और जीवन में अपनी पसंद खुद बनाते हैं। वे चीजों को अपने हिसाब से चलाने की कोशिश करते हैं। वे खुद पर विश्वास करते हैं और अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करते हैं। वे चीजों पर आंख मूंदकर विश्वास नहीं करते, बल्कि विज्ञान पर भरोसा करते हैं। वे सीखने की प्रक्रिया का पालन करते हैं और समझते हैं कि शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है। उनमें नई चीजों को आजमाने का साहस होता है और वे जीत या हार पर ज्यादा निराश नहीं होते। यदि वे हार जाते हैं, तो वे फिर से प्रयास करते हैं। उनका लक्ष्य जीतना है. इन सभी चीजों के कारण, फैशन पसंद करने वाले नियमित लोग भी सफल और अमीर बन रहे हैं।

इस नई पीढ़ी ने शायद बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविताएँ पढ़ी होंगी। यही कारण है कि अब वे समझ गए हैं कि जीवन वास्तव में क्या है। अपनी एक कविता जगत–उबारो में नवीन जी, जो एक प्रसिद्ध कवि हैं, युवाओं को स्वार्थी होने के बजाय दयालु और मददगार बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह चाहता है कि वे दुनिया को अपनी समझें और इसे एक बेहतर जगह बनाने की दिशा में काम करें। उनका कहना है कि हमें सभी के लिए शांति और खुशी लानी चाहिए और अपने गांवों और शहरों को नष्ट करने के बजाय उनका निर्माण करना चाहिए।

इसका मतलब यह है कि हमारे देश के आजाद होने के बाद युवा जब समाज में समस्याएँ देखते हैं तो चुप नहीं रहते। वे यह नहीं सोचते कि सब कुछ ठीक है या कोई और समस्याओं का समाधान कर देगा। इसके बजाय, वे अपने स्वयं के समाधान लेकर आते हैं। इससे हमारा देश बहुत तेजी से प्रगति कर रहा है। जो कवि नई और अलग चीजें आजमाते हैं वे ही इस बदलाव को लाने के लिए श्रेय के पात्र हैं। साथ ही, उन सभी लोगों को उनके प्रयासों के लिए मान्यता दी जानी चाहिए जो हिंदी में लिखते हैं और अपने विचारों का प्रसार करते हैं।

संदर्भ

- त्रिपाठी, विजयकान्त (२०१०), आधुनिक हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की उपस्थिति. हिंदी साहित्य समीक्षा ६२.२ ७४–८३.
- गुप्ता, सुनीता (२०१८), सामाजिकता और लोकतांत्रिकतारू आधुनिक हिंदी कविता की एक पहचान. हिंदी साहित्य पत्रिका १८.३ २०–२८.

- मिश्र, रामादत्त. (२००८), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतिपादन.ष साहित्य संग्राम २७.२रू ४७—५२.
- सिंह, राजेश. (२०१४), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रासंगिकता.ष आधुनिक हिंदी कविता का प्रभाव १.१रू ११२—१२०
- पाण्डेय, अविनाश. (२०१२), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति.ष कवि समालोचना १७. २रू ४८—५७.
- मिश्रा, पंकज. (२०१६), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों का संचाररू एक विश्लेषणात्मक अध्ययन.ष अनुवाद साहित्य शोध पत्रिका १.२रू १६—२४.
- गुप्ता, रवि. (२०१६), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों का आदान—प्रदान.ष साहित्यामृत ८६.२रू ७७—८२.
- त्रिपाठी, श्रीराम. (२०१८), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतिपादन.ष हिंदी अनुवाद पत्रिका ८६रू ८३—८८.
- गोस्वामी, मनीष. (२०१८), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन.ष हिंदी चिंतन १२.२रू १५४—१६१.
- मिश्र, राजेश कुमार. (२०१६), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रासंगिकता.ष हिंदी अध्ययन समीक्षा १०.२रू ४७—५२.
- मिश्र, राजेश कुमार. (२०२०), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा.ष हिंदी साहित्य विज्ञान १७.१रू ५७—६५.
- गुप्ता, विनोद कुमार. (२०२१), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्राधान्यता.ष हिंदी साहित्य समीक्षा ३७.४ १२०—१३०.
- यादव, विजय. (२०२१), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों का अध्ययन.ष हिंदी अनुवाद पत्रिका १२. ४रू २३—३०.
- पाण्डेय, अमित. (२०२२), हिंदी कविता में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और प्रस्तावना.ष हिंदी साहित्य विचार १००.२रू ५३—६२.